दिनांक : 16 जनवरी, 2014

एएपी की वैकल्पिक राजनीति लड़खड़ाई

अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

भारत को वैकल्पिक राजनीति देने का वादा किया गया था। मुझे व्यक्तिगत तौर पर उम्मीद थी कि आम आदमी पार्टी (एएपी) ने जिस तरह की वैकल्पिक राजनीति देने का वादा किया है, वह भारतीय समाज में अमिट छाप छोड़ेगी। परम्परागत राजनैतिक दल और राजनीतिज्ञ अब ईमानदारी और जवाबदेही का महत्व समझेंगे। लेकिन देश को मखौल और अराजकता देखने को मिली।

किसी भी राजनैतिक दल की स्थापना और उसके बाद उसके सदस्यों और उसकी विचारधारा की तलाश करने में अंतर्निहित खतरे होते हैं। इस प्रक्रिया में, कुछ पृथक, खुद को सदाचारी बताने वाले लोग नये संगठन में एकत्र हो गए। बेंगलुरु के एक पूर्व एयरलाईन मालिक और मुंबई के एक बैंकर बाजार अर्थव्यवस्था के सर्वेसर्वा दिखाई दे रहे हैं। छत्तीसगढ़ में माओवादियों से सहानुभूति रखने वाला एक व्यक्ति पार्टी का सदस्य है। जवाहरलाल नेहरु यूनिवर्सिटी का एक अन्य व्यक्ति कश्मीर के विभिन्न गुटों को भारतीय राज्य के खिलाफ एकजुट होने की सलाह दे रहा है। उसकी प्रतिबद्धता के कारण गुजरात सरकार के खिलाफ यूएस फैडरल कमेटी (यूएससीआईआरएफ) के समक्ष उसे गवाही देने का मौका मिला। एक प्रमुख सदस्य ने कश्मीर घाटी और माओवादी बहुल इलाकों में जनमत संग्रह कराने का समर्थन किया है बेशक इन इलाकों में सुरक्षा प्रदान करने की जरुरत हो या न हो। अहमदाबाद की एक अन्य सक्रिय कार्यकर्ता जिनके पास मोदी के खिलाफ प्रचार करने के अलावा और कोई काम नहीं है, वह अन्य बातों के अलावा गे सैक्स के मामले में पार्टी के अन्य सदस्यों की राय जानना चाहती हैं। वह पार्टी में ऐसे लोगों को शामिल किये जाने लेकर शंकित हैं जिनके गे सैक्स के बारे में दकियानूसी विचार हैं।

नये दल की न्याय शास्त्र के बारे में अलग अवधारणा है, कि न्यायाधीशों को कार्य पालिका को रिपोर्ट करना होगा। एक आरोपी मंत्री को यह तय करने का अधिकार है कि न्यायाधीश सही है या गलत। वह उसके खिलाफ आदेश को अस्वीकार कर देता है। एक ऐसी राजनैतिक व्यवस्था जहां भीड़ नियंत्रण का स्रोत है, उसका शुरुआती उत्साह खत्म हो चुका है। लगता है जैसे पार्टी के आर्थिक नीति के बारे में शुरुआती संकेत प्राकृतिक संसाधनों और हवाई अड्डों के राष्ट्रीयकरण, अधिक सब्सिडी और उसके बाद अधिक टैक्स को लेकर थे। आदर्शवाद की भावना कामकाज तलाशने में बदल गई, जिसके परिणामस्वरुप पार्टी के भीतर ही दरार पड़ गई।

यह सभी कुछ तीन सप्ताह से भी कम समय में हो गया। मुझे डर है कि इस प्रयोग की विफलता को अन्य पार्टियां ईमानदारी और जवाबदेही के उच्च मानकों के अच्छे संदेश की विफलता के रुप में नहीं लेंगी।

*****